तित्थयर

|| जैन भवन ||

वर्ष : २९ अंक : १२ मार्च २००६

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ अंक - १२, मार्च २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म, बंधन, मोक्षः जैन और अद्वैत दृष्टिकोण	डॉ. रंजन कुमार	६६५
२.	जिनवाणी	हरिसत्य भट्टाचार्य	६७४
३.	सिंहल की राजकन्या (सुदर्शना)	आचार्यश्री विजयविशालसेन सूरिजी म. सा.	६७९

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म, बंधन, मोक्षः जैन और अद्वैत दृष्टिकोण

डॉ. रज्जन कुमार

'बंधन और मोक्ष वह दार्शनिक प्रश्न है जिसपर निरंतर विचार किया जाता रहा है। विचार शृंखला अत्यन्त गंभीर एवं महत्वपूर्ण है। इस संबंध में जैन दार्शनिकों एवं अद्वैत वेदान्त विशेषकर शांकर मत की क्या प्रतिक्रिया है प्रस्तुत पत्र में इसी पर चिन्तन करने का प्रयास किया गया है।"

बंधन – मोक्ष : दुःख अथवा पीड़ा बंधन है जबकी इससे मुक्ति मोक्ष है। इसका कारण क्या है? यही प्रश्न दार्शनिकों के लिये एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार बंधन का मूल कारण अविद्या या अज्ञान है।[१] जबकि जैनदार्शनिक अविद्या के साथ-साथ अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को बंधन का प्रमुख कारण मानते हैं।[२] यह अविद्या जीव अथवा आत्मा का स्वाभाविक गुण नहीं है, वरन् स्वयं जीव की मिथ्या कल्पना का परिणाम है। वस्तुतः जीव के बंधन का कारण स्वयं उसके मन में ही है, कहीं बाहर नहीं है। क्योंकि बंधन न तो शरीर में है, न इन्द्रियों में है और न ही बाहर किसी अन्य वस्तु में, बल्कि इनके निमित्त से मन में राग-द्वेष रूपी जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन भावों के कारण ही बन्धन होता है।

वस्तुतः बंधन का मूल कारण राग-द्वेष को माना गया है जो मोह के कारण उत्पन्न होता है[३] यही मोह जीव को बंधन में डाल देता है। यह मोह जीव का स्वाभाविक गुण है। इस संबंध में आचार्य शंकर का मत उल्लेखनीय है– यदि हम यह मानकर चलें कि अविद्या जीव का स्वाभाविक गुण है तो ऐसी परिस्थिति में अज्ञान का कभी निवारण ही नहीं हो सकता है और जीव निरंतर बंधन में पड़ा रहेगा।[४] इसलिए यह बंधन भी केवल व्यवहारिक दृष्टिकोण से सत्य है। पारमार्थिक सत्य तो यह है कि जीव न कभी बंधन में पड़ता है और न कभी मोक्ष को प्राप्त करता है। शंकर कहते हैं कि बंधन और मोक्ष दोनों केवल व्यावहारिक दृष्टि से ही सत्य है।[५]

अध्ययन एवं उपाचार्य, अनुपयुक्त दर्शन, म. ज्यो. . फुले रूहेलखण्ड वि. वि., बरेली।

अद्वैत वेदान्त में बंधन के कारकों का निवारण कर मुक्ति प्राप्त करने में ज्ञान को महत्वपूर्ण माना गया है। शंकराचार्य दृढ़तापूर्वक इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हैं कि ज्ञान (आत्मज्ञान या ब्रह्मज्ञान) स्वयं मोक्ष है।[६] मोक्ष के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि आत्मा को अपने स्वरूप में स्थिति ही मोक्ष है।[७] इसकी दूसरी परिभाषा यह दी गई है कि अविद्या की निवृत्ति ही मोक्ष है, मोक्ष और अविद्या निवृत्ति एक ही है[८]। शंकराचार्य का कहना है कि मोक्ष की प्राप्ति कर्म से या ज्ञान कर्म समुच्चय से नहीं हो सकती, क्योंकि कर्म से निष्पन्न होने वाला कोई पदार्थ नित्य नहीं होता जबकि मोक्षावस्था नित्य है।[९] मोक्ष ज्ञान का उत्पाद्य नहीं है क्योंकि ज्ञान का उत्पाद्य होने पर वह अनित्य हो जाएगा, अतः ज्ञान और मोक्ष एक ही है।[१०]

जैन दार्शनिक मोक्ष को आत्मा की वह विशुद्धावस्था मानते है जिसमें किसी भी विजातीय तत्व के साथ संयोग नहीं रहता और सम्पूर्ण विकारों का अभाव होकर आत्मा स्व-स्वरूप में स्थिर हो जाती है। इसमें जीवन का विसर्जन न होकर मानव बुद्धि में उत्पन्न मिथ्यात्व का नाश होता है। इस मिथ्यात्व के स्थान पर सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्चरित्र का विकास होता है। मोक्ष वस्तुतः कोई ऐसी दुर्लभ वस्तु नहीं है जिसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। वास्तव में कर्मबंधन के मूल कारणों पर विजय प्राप्तकर लेने पर स्वतः प्राप्त हो जाता है। दशवैकालिक में कहा गया है—आरक्षित आत्मा आवेगों में फँसकर कर्मों का बन्ध करती है और सुरक्षित आत्मा विकारजन्य या कर्मजन्य समस्त बंधनों को तोड़कर मुक्त हो जाती है।[११]

वस्तुतः जैन एवं अद्वैतवादी दोनों इस बात पर एकमत है— मोक्ष या मुक्ति जीवन का अभिन्न अंग है। बंधन एवं मोक्ष जीवन के दो पक्ष हैं जहाँ अन्यान्य कारणवश जीव/आत्मा अपनी प्रकृतावस्था को विस्मृत कर बैठती है वही मोक्षावस्था में वह समस्त विकारों का दमनकर एक शुद्ध विशुद्ध एवं शाश्वत स्थिति प्राप्त करती है।

कर्म, बंधन और मोक्ष : बंधन और मोक्ष कर्म के अभाव में निष्प्रयोज्य है। क्योंकि कर्म ही जगत् वैचित्र्य एवं दार्शनिक ऊहापोह का केन्द्रीय तत्त्व है। यह कर्म ही है जो जीव को बंधनयुक्त करता है और बंधनयुक्त जीव इसी

कर्मबंधन से मुक्त होकर मोक्षावस्था की कामना करते हैं। वस्तुतः कर्म क्या है और यह किस प्रकार बंधन एवं मोक्ष से संबद्ध है आदि कुछ ऐसे प्रश्न है जिनपर दार्शनिकों ने पर्याप्त चिन्तन किया है और जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

कर्म का साधारण अर्थ क्रिया होता है। वेदों से लेकर ब्राह्मण काल तक वैदिक परम्परा में कर्म का क्रियापरक अर्थ ही दृष्टिगत है, परन्तु जैन दर्शन में कर्म शब्द विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। वैसे जैन दर्शन में क्रिया को ही कर्म कहा गया है और क्रिया में जीव की शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक तीनों ही प्रकार की क्रियाओं को समाविष्ट किया गया है। वस्तुतः शरीर, मन, एवं वाणी के निमित्त से जो कुछ भी किया जाता है उसे कर्म कहा गया है। शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक व्यापार को जैन दर्शन में योग[१२] कहा गया है और इस व्याख्या का जो हेतु है वही कर्म है। आचार्य देवेन्द्रसूरि कर्म की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जीव की क्रिया का जो हेतु है वही कर्म कहलाता है।[१३]

वस्तुतः जैन परम्परा में क्रिया और क्रिया के हेतु या कारण दोनों को कर्म कहा गया है। इसके साथ-साथ यहाँ कर्म को पौद्गलिक माना गया है और ये वे पुद्गल परमाणु हैं जो किन्हीं क्रियाओं के परिणाम स्वरूप आत्मा की ओर आकर्षित होकर (आस्रव) कालक्रम में अपना फल प्रदान करते हैं और आत्मा में विशिष्ट मनोभाव उत्पन्न करते हैं।[१४] जैन मतानुसार आत्मा का बंधन स्वतः होता है। अतः इसका कोई निमित्त कारण अवश्य होना चाहिये। बंधन के हेतु कषाय, राग, द्वेष, मोह आदि मनोभाव भी आत्मा में स्वतः उत्पन्न नहीं होते अपितु कर्म वर्गणा के विपाक के फलस्वरूप चेतना के सम्पर्क में आने पर ये तज्जनित मनोभाव बनते हैं। ये कर्म-पुद्गल प्राणी की क्रिया द्वारा उसकी ओर आकर्षित होते हैं। ये ही बंधन के मूल कारण हैं। इनसे विरत होना ही मोक्ष है।

आचार्य शंकर के इस संबंध में अपने विचार है। उनका मत है कि जीव कर्म से बंधन में है और ज्ञान से मुक्त हो जाता है। इसलिये पारदर्शी मुनिजन कर्म नहीं करते। यहाँ ज्ञान और कर्म को विद्या, अविद्या रूप माना गया है। कर्म

अविद्या जन्य है। केवल अज्ञानी द्वारा कर्म किया जाता है। ज्ञानी के लिये कर्म का विधान नहीं है।[१५] केवल त्रयी-धर्म (वैदिक-कर्म) में लगे रहने वाले सकाम पुरुष आवागमन को प्राप्त होते हैं। अतः अज्ञान का पूर्णतया क्षय होनेपर ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है। यही मोक्ष परम कल्याणकारी और सत् चित् आनंद स्वरूप है। एक बार यह प्राप्त हो जाता है तो पुनः इसका नाश नहीं होता।

व्रत, दान, तप, यज्ञ, सत्य, तीर्थ, आश्रम और कर्मयोग ये सभी स्वर्ग के हेतु हैं। परन्तु अशुभ, अकल्याणकर और अनित्य हैं। ज्ञान नित्य शान्तिकारक और परमार्थरूप है। मनुष्य यज्ञों के द्वारा देवत्व प्राप्त करता है, तपस्या से ब्रह्मलोक को पाता है, दान से तरह-तरह के भोग को प्राप्त करता है और ज्ञान से मोक्ष-पद पाता है। पुरुष धर्म की रस्सी से ऊपर की ओर जाता है और पापरज्जु से अधोगति को प्राप्त होता है। परन्तु जो इन दोनों को ज्ञान रूप खड्ग से काट देता है वह देहाभिमान से रहित होकर शान्ति प्राप्त करता है।[१६]

जैनमत और आचार्य शंकर के मत में यहाँ जो अंतर परिलक्षित है वह वस्तुतः निमित्त और उपादान को लेकर है। क्योंकि बंधन की दृष्टि से आत्मा की अशुद्ध मनोवृत्तियाँ (कषाय और मोह) और कर्म-वर्गणा के पुद्गलों में पारस्परिक संबंध है। वस्तुतः बंधनकी दृष्टि से जड़ कर्म-पुद्गल बंधन के निमित्त कारण हैं और आत्मा उपादान कारण। एकांत रूप से न तो आत्मा बंधन का कारण है और न ही कर्मपुद्गल ही, अपितु दोनों के पारस्परिक संयोग से आत्मा बंधन में आता है। इस तथ्य का भान एकमात्र ज्ञान से ही संभव है।

कर्म, ज्ञान और मोक्ष : मोक्ष आत्मज्ञान है। आत्मज्ञान अनात्मज्ञान (अविद्या) की निवृत्ति है। अतः मोक्ष ज्ञानसाध्य है। परन्तु यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि कर्म की उपयोगिता क्या है? क्या कर्म का कोई महत्व नहीं है। यदि ज्ञान ही मोक्ष का साधन है तो सभी प्रकार के कर्म लौकिक, आध्यात्मिक (वैदिक) कर्म व्यर्थ हैं। इस संबंध में शंकर और जैन दोनों ही कर्म और ज्ञान की पारस्परिकता को उदाहरण के द्वारा समझाते हुए इनके वैशिष्ट्य का

विवेचन करते है। आचार्य शंकर इस हेतु परमार्थिक एवं व्यवहारिक दोनों ही दृष्टियों का सहारा लेते हैं जबकि जैन मतावलंबी पारस्परिक रूप से इसका समाधान प्रस्तुत करते हैं। मोक्ष के लिए ज्ञान और कर्म दोनों को आवश्यक मानते हैं।

शंकर ज्ञान और कर्म में अन्धकार और प्रकाश के समान नितांत भेद मानते हैं। प्रकाश के सामने अंधकार का कोई महत्व नहीं है। ज्ञान होने पर कर्म-सम्पादन व्यर्थ है, आत्मज्ञानी के लिए कर्म निष्प्रयोजन है। यह परमार्थिक दृष्टिकोण है। व्यवहारिक दृष्टि में कर्म का प्रयोजन है। कर्म से ही चित्त शुद्धि होती है और विशुद्धचित्त में ही शुद्ध-बुद्ध-मुक्त आत्मज्ञान संभव है। अतः कर्म विशुद्धि का मार्ग है। जैन चिन्तकों का भी इस संबंध में समान मत है। उनका यह मानना है कि चारित्र-शुद्धि के बिना मुक्ति कभी भी संभव नहीं है। क्योंकि चारित्र धर्म है। यह चारित्रधर्म तत्वज्ञान से पुष्ट होता है। आगम में इसे शील कहा गया है। शील के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना शील की प्रवृत्ति नहीं होती। इन्द्रियों के विषयों से विरत् रहने वाले व्यक्ति ही शीलवान् होते हैं और वे ही निर्वाण प्राप्त करते हैं।[१७]

केवल काम्य कर्मों को छोड़कर अन्य सभी वैदिक कर्म ज्ञान में सहायक होते हैं। कर्म से ही शरीर की शुद्धि होती है। शरीर-शुद्धि से ही चित्त-शुद्धि होती है। चित्त-शुद्धि से विशुद्धज्ञान (आत्मज्ञान) होता है। अतः शरीर को पाप रहित और चित्त को निर्मल करने के लिए कर्म आवश्यक है। परन्तु ज्ञान के पूर्व ही कर्म का महत्व है। आत्मज्ञान तो अंतिम सोपान है। आत्मज्ञानी के लिए कर्म का कोई प्रयोजन नहीं। ज्ञान की अग्नि तो सभी कर्मों को भस्म कर डालती है। अतः कर्म का प्रयोजन तो व्यवहारिक है, ज्ञान के उदय होने के पूर्व है। ज्ञानोदय के पश्चात् तो कर्म का अंधकार सर्वदा और सर्वथा समाप्त हो जाता है। परन्तु ज्ञानोदय के लिए साधक को 'साधन चतुष्टय' अथवा 'त्रिरत्न' की साधना करनी पड़ती है।

इनकी सहायता से साधक मोक्ष का अधिकारी बनता है। साधन-चतुष्टय आत्मा और ब्रह्म के द्वैतभाव को नष्ट करता है। साधक ब्रह्मस्वरूप बन जाता है। जबकि त्रिरत्न स्वयं मोक्षस्वरूप है और यह आत्मा के अनंत

चतुष्ट्य का प्रकाशक। साधन चतुष्ट्य- नित्यानित्य वस्तु विवेक; इहमुत्रार्थभोग विराग, शमदमादिसाधन सम्पत और मुमुक्षत्व का संयुक्त रूप है। त्रिरत्न--सम्यग् दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र के रूप में विख्यात् है।

सदेहमुक्ति और विदेहमुक्ति : सदेहमुक्ति और विदेहमुक्ति के संबंध में जैन एवं अद्वैतवादी द्वारा प्रस्तुत विचार अवलोकनीय है। वेदान्ती विदेहमुक्ति को ही प्रमुखता प्रदान करते हैं। जैन भी विदेहमुक्ति को ही सर्वोत्तम मानते हैं। परन्तु इस मत साम्य में भी पर्याप्त अंतर है। दोनों ही यह स्वीकार करते हैं कि मोक्ष-प्राप्त व्यक्ति का शरीर प्रारब्ध कर्मानुसार विद्यमान रहता है। परन्तु वह व्यक्ति संसार के प्रपंचों से दूर रहता है। मोह उसे सताता नहीं, शोक उसे अभिभूत नहीं करता, सांसारिक विषय़ के लिए उसे तृष्णा नहीं होती। यह जीवितावस्था में ही मुक्ति है। वेदान्ती इसे जीवन्मुक्त कहते हैं जबकि जैन इसे तीर्थंकर। प्रारब्ध कर्मों के समाप्त होते ही उसका शरीर छूट जाता है यह विदेह-मुक्ति की अवस्था है। जैन परम्परा में इसे सिद्धावस्था कहा गया है।

आचार्य शंकर जीवन्मुक्ति (सदेहमुक्ति) का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि ज्ञानी जीवितावस्था में ही मुक्ति प्राप्त कर लेता हैं। सर्प के उतारे हुए केंचुल के समान जीवन्मुक्त का शरीर पड़ा रहता है। जीवन्मुक्त शरीर में स्थित वह आत्मा अशरीर है, अमृत, प्राण और ब्रह्म है। स्वयं प्रकाश है और वस्तुतः वह नेत्रविहीन भी सनेत्र के समान है, स्रोतहीन भी सस्रोत्र के समान है, वाणीरहित भी वाणीसहित सा, मनरहित भी मनसहित सा है।[१८] जीवन्मुक्त का भोग शरीरपात से पूर्व तक निर्लिप्त पुरुष की फलरहित क्रिया मात्र है।

शंकर पूर्ण मोक्ष में शरीर और इन्द्रियों का अभाव मानते हैं।[१९] जीवन्मुक्त देहपात के बाद ब्रह्मैक्यरूप जिस मोक्ष की अनुभूति करता है वह मोक्ष पारमार्थिक, कूटस्थ, नित्य, आकाशतुल्य सर्वव्यापी है। यह सभी विकारों से रहित, नित्य-तृप्त, निरवयव और स्वयं प्रकाश स्वभाव वाला है। इसमें धर्माधर्मादि नहीं रहते और न ही इसका कालत्रय से कोई सम्बन्ध है। यही अशरीरी नामक मोक्ष है अर्थात् विदेहमुक्ति है।[२०] सदानंद इसी को आनन्दैकरस से पूर्ण समस्त भेदों से रहित अखंड ब्रह्म में अवस्थिति वाला परम एवं

पूर्णकैवल्य मानते हैं[२१] । जैन परम्परा में यह सिद्धजीव है जो समस्त घाती-अघाती कर्मों से युक्त होकर सिद्धशिला पर प्रतिष्ठापित होता है।[२२] दोनों ही मत मुक्त जीव के पुनर्जन्म का निषेध करते हैं क्योंकि वह फलों की आशा के बिना कर्म करता है।

बंधन-मोक्षः जैन और शंकरमत : तुलनात्मक विवेचन करने पर हमारे समक्ष बंधन और मोक्ष के संबंध में जैन और शंकर के विचारों में मूलभूत अंतर मिलता है जो दार्शनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। आचार्य शंकर ने कर्म-बंधन के कारण के रूप में अविद्या को प्रमुख कारक माना है। इसके विपरीत जैन दर्शन में अविद्या के साथ-साथ अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग को कर्मबंधन का महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। अद्वैतवादी बंधन और मोक्ष को व्यवहारिकदृष्टि से सत्य तो स्वीकार करते है परन्तु पारमार्थिक दृष्टि से वे इसे मिथ्या, भ्रमपूर्ण और अवास्तविक सिद्ध करते हैं। दूसरी तरफ जैनों ने आत्मा के बंधन और मोक्ष को मिथ्या या अवास्तविक न मानकर सत्य माना है। इसी के आधार पर ये सांसारिक और मुक्त जीवों की व्याख्या करते हैं।

आचार्य शंकर मोक्ष प्राप्ति के लिए एकमात्र ज्ञान को ही आवश्यक मानते हैं। दूसरी तरफ मोक्ष के साधन के रूप में कर्म और ज्ञान-कर्म समुच्चय के दावों की भी समीक्षा करते प्रतीत होते हैं।[२३] समीक्षा पश्चात् वे स्पष्ट रूप से यह विचार व्यक्त करते हैं कि कर्म से मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है क्योंकि कर्म का परिणाम किसी वस्तु को आरम्भ करना हैं, लेकिन मोक्ष नित्य है और किसी भी नित्य वस्तु का आरम्भ नहीं किया जा सकता। लोक में जिस वस्तु का भी आरंभ होता है वह अनित्य हुआ करती है। अतः मोक्ष कर्मारब्ध नहीं है। ज्ञान में भी सभी प्रकार के ज्ञान को नहीं, बल्कि तत्त्वज्ञान को ही मोक्ष-प्राप्ति हेतु महत्वपूर्ण बताया गया है।[२४] जबकि जैन परम्परा में ज्ञान के साथ-साथ सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्चारित्र को भी मोक्ष प्राप्ति का अनिवार्य साधन माना गया है।

साथ ही साथ दोनों यह मानते है कि आत्मा की स्वाभाविक दशा ही मोक्ष है। बंधन स्वाभाविक दशा न होकर आत्मा की वैभाविक दशा है। यद्यपि शंकर

के अनुसार विभाव की यह अवस्था सत्य नहीं, मात्र प्रतीति है। जबकि इसके विपरीत जैन दार्शनिक आत्मा की इस विभाव दशा को प्रतीति न मानकर सत्य स्वीकार करते हैं। बंधन का कारण शंकर ने अविद्या या मिथ्यात्व को माना है जबकि जैनदर्शन मोह को बंधन का प्रमुख कारण मानता है।

सन्दर्भ :

१. आत्मानि एवाविद्यानिवृत्तिः। शांकर भाष्य बृह. उप., १/४/१०

२. मिथ्यांदर्शनाविरतिप्रमादकषाय योगाबन्धहेतवः। तत्वार्थसूत्र, ८/१

३. रागो य दोसो नि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति।

— उत्तराध्ययन, ३२/७

४. शंकरभाष्य, ६/३/४२

५. भारतीय दर्शन में मोक्ष चिन्तनः एक तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. अशोक कुमार लाड, म. प्र. हिन्दी अकादमी, भोपाल, १९७३, पृ. १५६

६. मोक्षज्ञान कार्यमित्युच्यते। बृह. उप. शां. भा., ३/१/१३

७. स्वात्मन्यवस्थान मोक्षः। तैत्ति. उप. भा., १/११

८. अविद्यापगमयात्रत्वात् ब्रह्मप्राप्तिफलस्य। बृह. उप. भा., १/४/१०

९. नहि क्रियानिर्वृनाऽर्थो नित्यो दृष्टः नित्यश्च मोक्षाऽभ्युपगम्यते।

— वही. ४/४/६

१०. मोक्षप्रतिबन्धनिवृत्तिमात्रमेव आत्मज्ञानस्य फलम्। शां. भा. १/२/४

११. अप्पाहु खलु सययं रक्खियत्वो सव्विंदिएहिं सुसमाइएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं उवेइ सुरक्खिओ सव्वदुक्खाण मुच्चई।

दशवैकालिक चूलिका, २/१६

१२. कायवाङमनःकर्म योगः। तत्वार्थसूत्र, ६/११

१३. कीरइ जिएणं हेउहिं, जेण तो भण्णए कम्मं। कर्मग्रंथ, प्रथम भाग,

१४. दर्शन और चिन्तन, पं. सुखलाल संघवी, पृ. २२५

१५. भारतीय दर्शन, डॉ. बी. एन. सिंह, स्टूडेण्ट्स एण्ड फ्रेण्ड्स, बनारस, १९८४, पृ. ५०२-३

१६. धर्मरज्वा ब्रजेदूर्ध्वं पापरज्वा ब्रजेदधः।

द्वयं ज्ञानसिना छित्वा विदेहः शांतिमृच्छति ।। शां. भा. श्वेता. उप. १/१

१७. चारित्तं खलु धम्मो धम्मो जो सो समो त्ति णिद्दिट्ठो।

मोहक्खोह विहिणो परिणामो अप्पणो हु समो ।। प्रवचनसार, १/७

१८. तद्यथाऽहिषिल्वयनोवल्मीके मृता प्रत्यस्ता शयीतैवमेवेदं शरीरे शेते। सचक्षुरचक्षुरिव, सकर्णोअकर्ण इव सवागद्यवागिव समना अमना इव, सप्राणोऽप्राण इव इति च – शां. भा. ब्र. सू., १/१/४

१९. शां. भा. ब्र. सू., ४/४/१०

२०. वही., १/१/४

२१. न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति अत्रैव समवलीयन्ते 'विमुक्तश्च विमुच्यत' इत्यादिश्रुते :। वेदांतसार, २२६

२२. णट्ठट्ठकम्मदेहो लोयालोयस्स जाणओ दट्ठा।

पुरिसायारो अप्पा सिद्धो झाएह लोयसिहरत्थो।। बृहद्द्रव्य संग्रह, ५।

२३. गीता, २/१०; तै. उप. १/३ पर शंकर भाष्य

२४. ब्रह सू. शां. भा., २/१/११ ; ३/३/३२ ; शंकर गीताभाष्य, १३/११

२५. सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्ष मार्गः। तत्वार्थसूत्र, १/१

जिनवाणी

श्री हरिसत्य भट्टाचार्य

नैयायिकों के मतानुसार इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान, सुख आदि आत्मा के गुण हैं। गुण गुणी के साथ समवाय संबन्ध से संबन्धित रहता है। अर्थात् ज्ञानादि गुण आत्मा के साथ संलग्न तो अवश्य हैं, परन्तु स्वरूप और स्वभाव से आत्मा निर्गुण है। ज्ञान या चैतन्य आत्मा का स्वभाव नहीं है। कैवल्यावस्था में आत्मा स्वभाव में अर्थात् निर्गुणभाव में रहता हैं। ज्ञान यह कोई आत्मा का स्वभाव नहीं है, इस लिये न्यायमतानुसार आत्मा स्वरूप में अज्ञान, अचेतन अथवा जड़ स्वरूप है। जिस प्रकार ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने Idea को Phenomenon के साथ एकान्त संयुक्त रूप से मानते हुये भी स्थान स्थान पर उसकी (Idea की) पूर्ण स्वतन्त्रता की कल्पना की है उसी प्रकार नैयायिकों ने आत्मा का ज्ञानादि गुण के साथ समवाय संबन्ध मानने पर भी उसके जड़त्वरूप स्वातन्त्र्य को स्वीकार किया है। नैयायिक एक और बात भी कहते हैं, और वह यह कि, जिस प्रकार आत्मा ज्ञानादि गुणों से स्वतन्त्र है उसी प्रकार वह पर्यायादि द्वारा भी अपरिवर्तित है। ज्ञान के साथ सम्बन्ध रहे या न रहे पर आत्मा सदैव कूटस्थ है, अपरिणामी है। तीसरी बात वे यह कहते हैं कि, आत्मा सर्वव्यापक और सर्वगत है। मूलतः वह जड़स्वरूप होने के कारण यदि वह सर्वव्यापक न हो तो फिर आत्मा का जगत के पदार्थों के साथ संयोग या संबन्ध असम्भव हो जाय। और यदि आत्मा सर्वगत न हो तो विविध दिशा और देशों में स्थित परमाणुसमूह से उसका युगपत् संयोग असम्भव हो जाय। और इस प्रकार का संयोग असंभव हो तो शरीरादि की उत्पत्ति भी असंभव हो जाय। अतएव आत्मा सर्वव्यापक है।

यह तर्क सभी दर्शन नहीं मान सकते। सांख्य और वेदान्त आत्मा को चैतन्यस्वरूप मानते हैं। आत्मा जड़ पदार्थ हो तो उससे पदार्थ-परिच्छेद असंभव हो जाय। वह अपरिणामी और कूटस्थ हो तो भी पदार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। और यदि आत्मा सर्वव्यापक हो तो फिर विविध प्रकार का आत्मा मानने के बजाय वेदांत कथित **'एकमेवाद्वितीयम्'** का सिद्धान्त

मान लेने से ही काम चल सकता है। इन विरोधों के कारण जैन मत ने न्यायमत का परिहार किया है। वह बतलाता है कि जीव (१) चैतन्य स्वरूप है, (२) परिणामी है और (३) स्वदेहपरिमाण है।

जैन दर्शन का युक्तिवाद कितना सुन्दर है! वह कहता है कि, यदि आत्मा जड़स्वरूप हो तो उसे पदार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। उदाहरणार्थ आकाश लीजिए, वह जड़स्वरूप है, उसे पदार्थज्ञान नहीं हो सकता, तो फिर आत्मा को कैसे हो सकता है? नैयायिक इसके उत्तर में कहेंगे कि आत्मा जड़स्वरूप हो सही, परन्तु वह समवाय सम्बन्ध से चैतन्य-समवेत है। आकाश तो सर्वथा जड़स्वरूप है इस लिए आकाश को पदार्थज्ञान नहीं होता, परन्तु आत्मा को तो हो ही सकता है। यहाँ दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि, आकाश और आत्मा दोनों जड़स्वरूप हैं और आप कहते है कि, एक को ज्ञान होता है और दूसरे को नहीं; लेकिन इस बात का प्रबल कारण आप नहीं जान सकते। वास्तव में इसका यही अर्थ है कि आत्मा में स्वभावतः चैतन्य है।

नैयायिक कहते हैं— "परन्तु आत्मा का आत्मत्व कहां जायगा? हमें जो यह निश्चय होता है कि 'मैं हूं,' इसका कारण आत्मत्व– अहंत्व ही है। आत्मा में आत्मत्व–जाति होने के कारण उसमें चैतन्य रहता है और आकाश में आत्मत्व नहीं है इस लिए उसमें चैतन्य भी नहीं है।" नैयायिकों को इसके उत्तर में कह सकते हैं कि आपका यह कहना तो ठीक है कि आत्मत्व–जाति आत्मा में समवाय संबन्ध में रहती है, परन्तु इससे आपकी युक्ति 'अन्योन्यसंश्रय' दोष से नहीं बच सकती। जिस प्रकार आत्मा में आत्मत्व का प्रत्यय होता है, आकाशत्व का नहीं होता; उसी प्रकार आकाश में आकाशत्व का प्रत्यय होता है, आत्मत्व नहीं होता। मतलब यह हुआ कि, किस पदार्थ में किस जाति का समवाय है यह बात उसके प्रत्यय में सिद्ध होती है। और इस प्रत्यय-विशेषकी जांच करें तो आत्मा में आत्मत्व समवेत है इसलिये आकाशत्व का प्रत्यय नहीं होता और आकाश में आकाशत्व है इसलिये उसमें आत्मत्व का प्रत्यय नहीं होता। सारांश यह कि यह युक्ति निरर्थक है।

जैनाचार्य कहते हैं कि, आत्मा में जो आत्मत्व का प्रत्यय होता है वही उसके चैतन्य, आत्मा के स्वरूप अथवा उसकी प्रकृति को सिद्ध करता है। आत्मा के साथ चैतन्य का थोड़ा भी तादात्म्य न माने तो उपरोक्त प्रत्यय का आपको कोई भी कारण न मिलेगा।

न्यायाचार्य कहते हैं कि, आत्मा में चैतन्य समवाय संबन्ध से रहता है, ऐसी हम सबको प्रतीति होती है। इसके उत्तर में जैनाचार्य कहते हैं कि, यदि आप प्रतीति को ही प्रमाणभूत मानते हैं तो फिर आत्मा स्वयं ही चैतन्यस्वरूप है, ऐसी प्रतीति होती है, इसे क्यों नहीं मानते? "मैं स्वयं अचेतन हूँ– चेतना के योग से चेतन हूँ" ऐसी प्रतीति किसी को नहीं होती। सबको ऐसी ही प्रतीति होती है कि "मैं स्वभावतः ज्ञाता हूँ।" घट पटादि अचेतन हैं, उसे मैं ज्ञाता हूँ, ज्ञानवान हूँ यह प्रतीति नहीं होती। यदि आत्मा अचेतन होता तो घट पटादि को भी ऐसी प्रतीति हो सकती थी। जैनाचार्यों की युक्ति ठीक-ठीक समझ में आने योग्य है। आत्मा जड़स्वभाव वाला होता तो अर्थपरिच्छेद सर्वथा अशक्य हो जाता।

नैयायिक थोड़ा और आगे बढ़कर एक दूसरी युक्ति देते हैं। वे कहते हैं कि "मैं ज्ञानवान हूँ" ऐसा हमें जो प्रतीत होता है उससे सिद्ध होता है कि आत्मा और ज्ञान पृथक-पृथक हैं—दोनों एक नहीं हैं। किसी को प्रतीत हो कि "मैं धनवान हूँ" तो इससे हम आत्मा और धन की अभिन्नता नहीं मान लेते।

जैनाचार्य उत्तर देते हैं कि, इस प्रत्यय से आत्मा और ज्ञान अभिन्न सिद्ध होते हैं। आत्मा जड़स्वभाव हो तो यह प्रतीति कदापि नहीं हो सकती कि "मैं ज्ञानवान हूँ"। यदि आप कहें कि आत्मा जड़स्वभावी होते हुए भी ज्ञानवान है तो फिर स्वयं ही अपने सिद्धान्त का खण्डन करते हैं।

"**नागृहीतविशेषणा विशेष्ये बुद्धि**" : यदि ज्ञानरूप विशेषण गृहीत न हुआ हो तो आत्मारूप विशेष्य में मैं ज्ञानवान हूँ' यह बुद्धि कैसे हो सकती है? अब यदि आप कहें कि आत्मा और ज्ञान, दोनों ही का ग्रहण होता है, तो दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि इस प्रकार का ग्रहण किस प्रकार हो सकता है? विशेषणभूत ज्ञानद्वारा इस प्रकार का ग्रहण संभव ही नहीं है, क्योंकि ज्ञान स्वयं अपने ही से पहिचाना जाय यह बात आपके अपने ही न्यायमत के विरुद्ध है। "**नागृहीत विशेषणा विशेष्ये बुद्धिः**" को तो आप स्वयं भी मानते हैं।

कदाचित् आप कहें कि ज्ञानान्तर द्वारा इस प्रकार का ग्रहण हो सकता है, तो इसमें 'अनवस्था दोष' आ जाता है, क्योंकि वही ज्ञानान्तर ज्ञानत्व विशेषण के ग्रहण बिना संभव नहीं है। प्रकट ही यह सिद्धान्त अनवस्था दोष से दूषित है। जबतक आप ज्ञान के साथ आत्मा की अभिन्नता को न मानें तबतक "मैं

ज्ञानवान हूँ'' यह प्रत्यय आपको नहीं होगा। यही कारण है कि जैन दर्शन न्यायदर्शनकथित आत्मा के जड़त्व से इन्कार करता है।

नैयायियों का दूसरा सिद्धान्त यह है कि ''आत्मा कूटस्थ नित्य है।'' अर्थात् आत्मा सदैव अपरिवर्तित है। जैन आत्मा को परिणामी कहकर इस मत का खण्डन करते हैं। वे युक्तिपूर्वक अपने सिद्धान्त की स्थापना करते हैं : ''ज्ञानोत्पत्ति के पहिले आत्मा की जो अवस्था थी वहीं अवस्था ज्ञानोत्पत्ति के समय भी रहे तो फिर उसे पदार्थ का ज्ञान किस प्रकार हो सकता है?'' सदैव अपरिवर्तित रूप में रहने को ही आप कूटस्थभाव कहते हैं। ज्ञानोत्पत्ति के पहिले आत्मा अप्रमाता है, परन्तु ज्ञानोत्पत्ति के समय वह प्रमाता है—पदार्थ-परिच्छेदक है: इस प्रकार आत्मा में एक प्रकार का परिवर्तन तो होता ही है। जब आप परिवर्तन मानते है तो फिर आत्मा का कूटस्थभाव कहाँ रहा?

जैन आत्मा को ''स्वदेहपरिमाण'' कहकर नैयायिकों के इस सिद्धान्त का खंडन करते हैं कि आत्मा सर्वव्यापक है। जैन कहते हैं कि, आत्मा को सर्वगत मानने के बाद उसके वैविध्य को मानने की आवश्यकता ही कहाँ रहती है? विविध मन के साथ के संयोग विविध प्रकार के आत्मा का अनुमान कराते हैं। पर यदि आत्मा सर्वगत व्यापक पदार्थ हो तो जिस प्रकार एक ही सर्वगत व्यापक आकाश के साथ विविध घटादि का संयोग होता है उसी प्रकार एक ही आत्मा के साथ विविध मनों का संयोग हो सकता है। आत्मा को सर्वव्यापक मानने से इस प्रकार युगपत् विविध शरीर और इन्द्रियादि का संयोग भी उसके साथ प्रतिपादित हो सकता है। इस प्रकार विविध आत्मा मानने की आवश्यकता नहीं रहती।

यदि आप कहें कि, एक आत्मा के साथ विविध शरीरादि का युगपत् संयोग होना असंभव है, क्योंकि आत्मा में परस्पर विरोधी सुख-दुःखादि भाव उत्पन्न नहीं होते, तो इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि इस युक्ति में आकाश में एक ही साथ विविध भेरियों का समवाय भी असंभव माना जायगा, क्योंकि सब भेरियों के शब्दादि परस्पर विरोधी होने के कारण एक भी शब्द सुनाई न देगा। यदि आप कहें कि प्रत्येक शब्द का कारण भिन्न भिन्न है इसलिये प्रत्येक शब्द परस्परविरोधी होने पर भी सुनाई देता है; यही कारण है कि आकाश एक होने पर भी उसमें विविध भेरियों का युगपत् समवाय हो सकता है। इसके उत्तर में कहा जा सकता है कि प्रत्येक सुख-दुःख का

कारण पृथक्-पृथक् होता है, जिससे सुख दुःखादि परस्पर भिन्न होते हुए भी उनका युगपत् अनुभव होता है। इस प्रकार एक ही आत्मा के साथ अनेक शरीरादिका युगपत् संयोग होना सम्भव हो जाता है। यदि आप कहें कि विरुद्ध धर्म के अध्यास के कारण आत्मा की विविधता माननी पड़ती है, तो फिर आकाश विविधता क्यों नहीं मानते?

यदि आप कहें कि, आकाश है तो एक, तथापि वह बहुत से पदार्थों को अवकाश देता है, तो इसका उत्तर यह है कि आत्मा भी एक ही है और उसमें समस्त शरीरादि पदार्थ प्रदेश प्रदेश पर संयुक्त रहते हैं। नैयायिक कहते हैं कि कोई मरता है, कोई जन्मता है और कोई कामकाज में लगा रहता है; इन सब व्यापारों को देखकर आत्मा की विविधता माननी पड़ती है। जैन इसका उत्तर देते हैं कि, आत्मा का सर्वगतत्व मानने से, जन्म, मृत्यु आदि व्यापार के बारे में आत्मा का एकत्व ही सिद्ध होता है। कहीं घटाकाश उत्पन्न होता तो अन्यत्र उसी समय दूसरे घटाकाश का विनाश भी होता है; शायद दूसरा एक घटाकाश पूर्ववत् रहता है। इन सब व्यापारों को देखते हुए भी यदि आकाश में बहुत्व मानने की आवश्यकता नहीं पड़ती तो फिर जन्म, मरण आदि व्यापारों के कारण आत्मा एक होने पर भी उसमें वह सब बन सकता है। आत्मा की विविधता आप किस कारण मानते है? कोई कहे कि विविधता न मानें तो बन्ध, मोक्ष असंभव हो जाय, क्योंकि एक ही वस्तु में एकसाथ बंध, मोक्षरूपी विरुद्ध भावों का एकसाथ समावेश नहीं हो सकता। पर इसके विरुद्ध यह तर्क किया जा सकता है कि किसी एक घड़े में आकाश में बन्द कर देने घटमुक्त आकाश रहेगा ही नहीं, और घटमुक्त आकाश के कारण घटबद्ध आकाश भी असंभव बन जाय। यदि आप कहेंगे कि प्रदेशभेद के कारण एक ही समय आकाश में बन्धन और मोक्ष होना संभव है, तब फिर सर्वगत एक ही आत्मा में प्रदेश भेद की कल्पना की जा सकती है और उसमें एक ही समय में बन्धन और मोक्ष का आरोपण हो सकता है। जैनाचार्यों के सम्पूर्ण कथन का आशय यह है कि, आत्मा को सर्वगत और सर्वव्यापक माना जाये तो फिर उसकी विविधता को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं रहती।

क्रमशः

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

वीणा के तार पर उसकी सुडोल सुकोमल अंगुलियाँ नाचने लगी और झंकृत वीणा में सुर आंदोलित हो उठे। उस रूपमती के दर्दीले गले से निकली भावपूर्ण गंभीर आशय वाली स्वर लहरी को वीणा की सुरावली का साथ मिला और गायक गीत संगीत ने गेय का, ध्याता ध्यान ने ध्येय का, उपासक उपासना ने उपास्य का, भक्त भजन ने भगवान् का तादात्म्य साधा और सारा ही वातावरण सजीव हो परमात्मा बन गया। भक्त भगवान के इस सुभग संगम ने अद्‌भुत आल्हादक और भावना की भव्यता का रंग बरसा दिया। हम दोनों ही भगवान् की वीतरागता एवं इस नारी की अतिनम्र भक्ति को नतमस्तक हो अनुमोदना की अंजली अर्पित करते रहे। हमे बड़ी अचरज और जिज्ञासा जगी थी कि यह रूप के अंबार जैसी युवती कौन है और संध्या समय में निर्जन निरनार पर, जहां से लौटते नीचे उतरते रात पड़ जाएगी - निर्भय हो अकेली कैसे आई है? इतनी सी उम्र में उतनी प्रौढ़ता और गहरी भक्ति कहां से कैसे पाई है? अतः हम द्वार पर खड़े हो गये और दिव्य रमणीके बाहर आते ही कहा-धर्म भगिनि! जय-जिनेन्द्र! प्रणाम!

उसने भी प्रसन्नता के साथ हाथ जोड़कर कहा जय जिनेन्द्रदेवकी! धर्म बन्धुओ प्रणाम!

आपको व आपकी धर्म प्रीति-भक्ति को देखकर हमें बहुत आनन्द एवं उत्कंठा हुई है-सच पूछो तो हमें आश्चर्य भी काफी हुआ है।

वह बोली भाईयो ! सारा संसार ही आश्चर्यमय है।

सही है। पर आप हैं कौन? कहां से आयी हैं? कहां ठहरी हैं?

वह खिलखिलाकर हँस पड़ी, फिर गंभीर हो बोली मैं कौन हूँ? कहाँ से आई? अरे! ये तो बहुत लम्बी दर्द भरी दास्तान है। व्यथा भरी कथा है।

आपकी कथा, लम्बी और दर्दीली?

हां - हां, मेरी ही तो बात है। आप तो बड़े पुण्यवान हैं। देखों ना सुबह से भोजन भी नहीं किया है आप लोगों ने, प्रभु की पूजा अर्चना-आंगी उपासना में सारा दिन पूरा कर दिया है। फिर मेरी भक्ति की अनुमोदना में शायद भोजन त्याग का समय - सूर्यास्त हो रहा है।

बहुत खाया। एक दिन का भोजन तो आर्हतो जैनों के छोटे बच्चे भी सरलता से छोड़ देते हैं। हमें तो आपकी कथा कहना। हम पर्वत उतरते जायेंगे और कथा सुनते जायेंगे।

आपको मेरी कथा सुननी है? किन्तु जिसने मनुष्य के भवको ही निष्फल बरबाद कर दिया हो उसके जीवन में कुछ जीवंत नहीं होता! धनपाल यह पर्वत तो आपको उतरना है मुझे नहीं।

हम दोनों विस्फारित नयनों से तकते रह गये और गौर से देखते हुये पूछा तो क्या आप नारी नहीं हैं क्या?

नहीं बन्धुओं ! मैं नारी नहीं, सामान्य देवी हूँ, किन्नरी देवी! कीमती और अनुकूल सामग्री वाला अति दुर्लभ मनुष्य का भव तो मैं कब की हार चुकी हूँ। यह मेरी ही नादानी और बचकानी इच्छा का परिणाम है। कहकर वह उदास हो गई।

मैंने कहा बहन! अभी भी तुम कोई पराधीन तो नहीं हो। इतना विपुल वैभव, गहरी सूझ-समझ, अडिग धर्मनिष्ठा और अचिन्त्य सामर्थ्य है तुम्हारे पास। फिर दुख-निराशा की क्या बात है?

अरे, भाई! कोई फायदा नहीं दुःख रोने से। मैं समझाने पर भी नहीं समझ सकी। अब मैं कैसे समझाऊँ कि मुझे कितना दुःख है? और जिसने कंकड़ के भाव हीरे बेच दिये हो उस कमनसीब को फिर मिले भी तो क्या मिले?

बहन! हमें तुम्हारी बात समझानी पड़ेगी, हम अबुध को तो कुछ भी समझ में नहीं आता। आपकी बात गहराई लिये है- वहां तक हमारी पहुँच ही नहीं है। योगानुयोग आपका संयोग हो गया अब हमें कहना ही होगा।

आपका आग्रह ही है तो सुनाऊँ अपनी गई-गुजरी जिन्दगी! हो सकता है कुछ फायदा। किन्तु यहीं कहीं बैठना होगा!

अवश्य हम दोनों राजी हो गये और पास ही झुर-मुट में पड़ी बड़ी शिला के ऊपर हम तीनों बैठ गये। आस-पास काली-काली पाषाण शिलाएँ बिखरी पड़ी थीं जो बैठे हुए हाथियों के समूह की भ्रांति करवाती थी।

संध्या समाप्त होने को थी। निर्जन-नीरव स्थान में हम बैठे थे। किन्नरी देवी कोई गहन में उतर गई हो ऐसी गंभीर बन गई और धीरतापूर्वक उसने अपनी आत्मकथा कहना प्रारंभ किया। आकाश में नक्षत्र हँसते मुस्कुराते कहीं कहीं दिखने लगे थे।

यहां से दक्षिण दिग्विभाग में मलयाचल पर्वत से सुशोभित मलय नामक हराभरा प्रदेश है। उसकी राजधानी मलया नगरी सुन्दर, समृद्ध और सुप्रसिद्ध थी। महाप्रतापी महासेनराजा वहां शासन करते थे। बल, बुद्धि, रूप, सौभाग्य और ऐश्वर्य के धनी-मानी-दानी ऐसे अनेक प्रतिष्ठित राजपुरुषों से भरी पूरी राजसभा में वे एक बार राजतंत्र का कुशल संचालन करते बिराजे थे कि निर्धारित समय पर पाटलीपुत्र नगर के महामात्य ने सभा में प्रवेश किया। अपने महाराजा जयवर्मा का पत्र प्रणाम पूर्वक अर्पण किया और कुशल क्षेम पूछकर उचित भद्रासन पर बैठे।

महाराजा महासेन पाटलीपुत्र नरेश जयवर्मा का मुद्रित पत्र खोल पढ़ने लगे-

परमप्रतापी सौजन्यमूर्ति सहृदयमित्र महासेन! प्रणाम पुरस्सर-कुशलपृच्छा कुशल निवेदन! आपको विदित ही होगा कि अति आश्चर्यकारक रूप तथा गुण के निधान जैसी हमारी इकलौती पुत्री चंपकलता की ख्याति सारे भारतवर्ष में है। उसकी प्रशंसा-प्रशस्ति मैं क्या लिखूं? सब ही जानते हैं कि इसके जैसी कन्या पूरे भारत में कहीं नहीं है।

इससे विवाह करने की इच्छा बड़े बड़े महाराजा, राजा, युवराज और महारथियों ने की, किन्तु राजकुमारी को कोई पुरुष पसंद नहीं आया।

हमने भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध, सौभागी प्रतापी, बली-दानी-ज्ञानी अनेक राजा-महाराजा आदि के चित्र मंगवाकर राजकुमारी तक पहुँचाये कि किसी तरह वह पुरुष की और आकृष्ट हो किन्तु हरेक चित्रों की उसने जी भरकर मजाक की और आखिर फाड़कर कूड़े कचरे में डाल दिये। हमारी परेशानी व फिक्र दिनों दिन बढ़ती चली गई। पर क्या करते?

आखिर एक दिन आपका चित्र भी राजकुमारी के पास भेजा गया। अचंभे की बात है कि आपकी छबि देखते ही वह मुग्ध हो गई। आप पर उसे दृढ़ अनुराग हुआ जिसे सभी ने भांपा और समझा।

आप भी योग्य और सुपात्र हैं। मणि और कंचन जैसा यह संबंध अपने दोनों ही राजघरानों में आनन्द, गौरव और प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला होगा.यह निःसन्देह बात है। अतः हमने हमारी प्राणाधिक प्रिय पुत्री आप को दी है। यह विज्ञप्ति मान्यकर हमारे महामात्य के साथ श्रेष्ठ मुहूर्त भिजवावें एवं समय पर विवाह के लिए ठाठबाठ से पधारें। क्षेम-कुशल के समाचार शीघ्र भिजवाए। (लि. भवदीय, जयवर्मा के प्रणाम)

महासेन राजा बड़े खुश हुए। उन्होंने अपने प्रधान मंडल में बात रखी, और सलाह मांगी। सभी ने शादी की बात पर प्रसन्नता व्यक्त कर सगाई निश्चित की। राजज्योतिषी के पास मुहूर्त निकलवाया। प्रस्थान का, पाटलीपुत्र में प्रवेश का तथा लग्न आदि का सारा कार्यक्रम निश्चित कर महाराजा महासेन ने महामात्य को दिया और सम्मान पूर्वक उन्हें विदा दी।

समय पर भव्य तैयारी पूर्वक राजा महासेन प्रधान सचिवों को राज्यभार सौपकर, अपने खास स्त्री-पुरुषों की बारात लेकर समुद्रमार्ग से पाटलीपुत्र की ओर चल दिये।

समुद्र के उछलते तरंगों को चीरता हुआ महाराजा महासेन का जंगी जहाज पवन वेग से बढ़ा जा रहा था। राजा का मन आनन्द विभोर हो चंपकलता की प्राप्ति के सपने देख रहा था। त्रिभुवन में अपने आपको परमपुण्यवान

मानता राजा अपने भाग्य की सराहना करता विचारों में खोया था। तेजीली रफतार से चलता जहाज आज उसे मंद लगा रहा था। भारतवर्ष की श्रेष्ठ राजकन्या को पाने के लिये युवान राजा का मन बड़ा ही अधीर हो उठा था। चंचल मन, रूपसुन्दरी चम्पकलता के महल में कभी का जा पहुंचा था। राजा मदहोश माहौल में अपने को भूल बैठे थे और रंगीन सपने सजा रहे थे। अचानक ही उनकी स्वप्न सृष्टि को धक्का लगा और मुलायम कल्पना टूटते ही वास्तविकता की कठोर भूमि पर आ गिरे। उन्होंने देखा कि समुद्र का मिजाज बिगड़ा हुआ है। आसमान और समन्दर एक दूसरे को डराने हड़पने की जैसे कोशिश कर रहे हों। दोनों ही एक दूसरे से ज्यादा डरावने और भयंकर बनते जा रहे थे। काला-काला आकाश कड़ाके के साथ चमकती बिजली से विकराल लग रहा था तो सागर के ऊंचे ऊंचे पहाड़ जैसे मोजे जहाज को जोरों के थपेड़े लगा रहे थे। पवन मानो समुद्र को मथ रही थी। यानपात्र बेकाबू हो बुरी तरह डोल रहा था। बाराती भयभीत हो प्रभुस्मरण कर रहे थे। नाविक नाखुदा-चालकगण अपनी सारी शक्ति व बुद्धि से जहाज को संतुलित करने में लगे थे। देखते ही देखते एक जोरों का कड़ाका हुआ और तैरते महल जैसा भव्य जहाज ताश के पत्ते की तरह टूट कर बिखर गया। सभी यात्री आदि उस विराट सागर में कहां खो गये, कोई पता नहीं। चला पता भी कौन किसका लगावें। सद्भाग्य से राजा महासेन के हाथ में टूटे जहाज का बड़ा पटिया आ गया। वे भाग्य के भरोंसे, लकड़ी के सहारे, हवा के इशारे समुद्र के प्रवाह में बहने लगे।

कितना समर्थ राजा, कैसी पराधान दशा? जीते तो बड़े जंग जीते, नहीं तो एक मच्छ अभी निगल जावे। कितने लोग राजा के सहारे, राजा लाचार बेसहारे। नहीं, यहाँ पल का भी भरोसा नहीं। मनुष्य सोचता क्या और होता क्या है। शादी के स्वर्णिम स्वप्नों में झूलता राजा जीवन और मृत्यु के बीच झोले खा रहा है।

बड़े बलशाली योद्धाओं को पछाड़ने के पराक्रम करने वाले राजा को जहां लकड़ी जाय वहां असहाय, दशामें जाना है। यदि कोई जलजन्तु आ जाय तो बिना प्रतीकार के आत्मसमर्पण कर जीते जी मौत का अनुभव करने का

मौका आ सकता है। अगर ऐसा कुछ हो गया तो? यह सोचते ही महासेन घबड़ा कर कांप उठे। तब तो खेल ही खत्म। जीवन मरण के सवाल पर पल पल बदलती परिस्थितियों को सहते, अनिश्चित भविष्य वाली सारी आशाओं को छोड़कर केवल परमात्मा के भरोसे उनके नाम स्मरण के सहारे-कड़ी धूप वाले दिन और डरावनी रातें बिताने लगे। तीन तीन दिन तक न खाना मिला न पानी। समुद्र के खारे पानी और धूप ने शरीर को हाल बेहाल बना दिया। चिंता ने जैसे सारा खून ही सोख लिया है। आखिर आयुष्य और पुण्याई बलवान होने के कारण वह लकड़ी का पटिया समुद्र मध्य स्थिति विमल नामक पर्वत की तलहटी को आ लगा। धरती पर पैर लगते ही स्वर्ग की प्राप्ति जैसा आनन्द राजा को हुआ। वे पटिया छोड़ पर्वत के नीचे भूमि पर खड़े रहे। एक जान लेवा आफत में से बच जाने का संतोष उनके मुंह पर साफ झलक रहा था। फिर भी अभी चिंता का भी पार नहीं था। तीन दिन के बाद आज जब मरने की घड़ी बीत चुकी थी तो भूख भी कड़ाके की लगी थी। भूख प्यास, चिंता, थकान आदि से पीड़ित राजा ने, किसी तरह इस पहाड़ पर चढ़ने से कुछ फल आदि मिल सकते हैं, इस उम्मीद पर धीरे धीरे पहाड़ पर चढ़ना शुरु किया। फिर से नयी आशा, नया प्रयास, नया उत्साह, नया परिश्रम।

सुकुमार शरीर, फिर भूखा-प्यासा, भविष्य का कोई पता नहीं। वह कहां पहुंचा है? कौन जाने। फिर भी वह साहस और धीरज के साथ आगे बढ़ने और चढ़ने लगा। साहस और धैर्य काम की चीज है। यह जिसके पास है उसने कभी कुछ नहीं खोया। साहस और धैर्य खोने पर आपके पास कुछ नहीं बचा। श्रद्धा के बिना न साहस होगा न धीरज।

निर्जन किन्तु रमणीय पर्वत पर आखिर वह चढ़ आया। ऊपर चढ़कर उसने देखा कि पर्वत की ऊपरी समतल भूमि पर, अचरज पैदा हो ऐसा सुन्दर और महान मंदिर था। बाजु में ही चारों तरफ से बंधी हुई पगथे वाली सुन्दर बावड़ी थी, जिसमें निर्मल जल और सुन्दर विकसित कमल थे।

राजा ने जलाशय में जाकर हाथ पैर धोये, समुद्र का क्षार साफकर पानी पिया। बाहर आकर विचित्र फल वगैरह खाये। कोई एक विश्राम स्थल पर

बैठकर मंदिर की शिल्पशोभा देखने लगा। मंदिर के प्रांगण में लकड़ी की पावड़ी देख उसे आश्चर्य आशा बंधी। वह विचारने लगा कोई देवभक्त सिद्ध पुरुष की यह पांव में पहनने की पावड़ी लगती है। वह हमेशा यहां अपने इष्ट की उपासना हेतु आता होगा उसके बिना समुद्र से घिरे इस पर्वत पर कौन आवे? उसे मिलकर विनय से पूछें कि यह कौन सी जगह है? यहां से पाटलिपुत्र एवं मलयवती नगरी कितनी दूर है? वह अवश्य मुझे सहाय करेगा और हो सकता है मुझे पाटलिपुत्र पहूंचा भी देवे, यदि पहुंचा देवे तो काम हो जावे, अभी तो मूहूर्त सम्हल सकता है। और....

और वह धीरे से उठा। प्रांगण में से ही अंदर झांका तो मुग्ध हो देखता ही रहा गया। रूप का सागर अपने में समेटे एक नवयुवती अकेली इस मंदिर के देवता को प्रसन्नता से अति हर्षावेश से पूज रही थी। उस रमणी ने असाधारण और कीमती जेवर पहने थे। सुगंधी द्रव्य, पुष्प आदि से वह पूजा में ओतप्रोत हो गयी थी, लीन हो गई थी।

अपलक नयनों से रूप-लावण्य को पीता हुआ राजा उसकी गति-विधि को छुपकर देखने लगा। उसी के विचारों में खो गया।

अहा! कैसा नशीला रूप! सुनहरा रंग! कैसा जादूभरा यौवन और उसकी चंचलता।

राजा सोचता है, ऐसा रूपरमणी तो आज तक कहीं नहीं देखी। आज तो आंखे सफल हो गई, अरे! इतने कष्ट उठाकर यहां मेरा आना भी सफल हो गया। परन्तु..... ये यहां कैसे आई? कहां से आई। जिस प्रतिमा की पूजा वह कर रही थी उसे देखने की राजा ने कोई परवाह ही नहीं की। वह तो उसी में लट्टू बन गया। मनुष्य कभी कभी दूसरों में इतना उलझ जाता है कि अपने आपको या अपने हाल को भी भूल जाता है।

वह युवती वीतराग भगवान मुनिसुव्रत की पूजा कर जिन मंदिर से निकल रंगमंडप में आई। यहां वह और ज्यादा अच्छी तरह से देखी जा सकती थी। सुन्दर सुडोल, नखशिख नयनाभिराम उस सुन्दरी की राजहंस जैसी मदभरी चाल को राजा मुग्ध हो देखता ही रह गया।

उस नारी ने विधिपूर्वक चैत्य वन्दन कर, भाव भक्ति से प्रभुजी की स्तुति प्रारम्भ की–

ओ अनन्त ज्ञानी भगवान् मुनिसुव्रतदेव! आप ही अज्ञान अन्धकार के नाशक सच्चे सूर्य हो। इच्छाओं को जीतने वाले आप ही सच्चे जेता विजेता हो। क्योंकि मोहरूप महान् मल्ल को विश्व के मैदान में पछाड़ने वाले केवल आप ही हैं, त्रिभुवन-रणरंग में आप ही ने विजयपताका प्राप्त की है।

ओ दयालु! पुलकित अंगवाले होकर विकसित नयनों से जिसने आपके दर्शन नहीं किये वह भाग्यहीन जीव दीनहीन होकर दूसरों के मुंह ताकता रहता है।

हेमुनिसुव्रत परमात्मा! भक्ति से भरपूर हृदयवाले होकर जिसने आपके चरणों में मस्तक नहीं नमाया वह वायु से प्रकंपित पौधे-पत्ते की तरह कहां कहां नहीं नमता फिरता?

हे तारक तीर्थपति! मुढ़ता के कारण जो जीव आपकी पूजा अर्चना नहीं करते वे हलके नीच पुरुष के भी जी हुजूर! घणी खम्मा! जी अन्नदाता! कहते हुए पीछे दौड़ते और सेवा करते हैं!

जिसने आपकी तीर्थयात्रा नहीं की, पूजा नहीं की, दर्शन नहीं किये तथा आपके महान गुणों की स्तुति नहीं की है, हे जगदीश्वर! उसके पैर, हाथ, आंख और जीभ का उसे कोई फल ही नहीं मिला।

ओ इन्द्रों को भी आदरणीय, मुनिन्द्रों को माननीय भगवन्! ओ पार्थिवों को भी पूजनीय प्रभु! मेरी प्रार्थना है कि मुझे मुक्ति का सुख दीजिये। मेरी उत्कट भावना सदा ही मेरे साथ रहे। जय हो, जय हो, वीतरागता की सदा जय हो! इत्यादि स्तुति कर वह उल्टे पैर धीरे-धीरे जिनालय से बाहर आई और पावड़ी पहन वन की शोभा निहारती हुई एक दिशा में चल दी।

छुपा हुआ राजा उसकी कैल के पत्ते जैसी पीठ और उस पर से नितंब तक पहुंच डोलते नाग जैसा काला मुलायम केश कलाप लुब्ध हो देखता रहा और आहें भरता रहा।

हरिछम हरियाली के मखमली कपड़ों से सजा हुआ एवं सिर पर श्री जिनमंदिर रूपी मुकुट से प्रकटप्रभावी उस पर्वत के चारों ओर सागर लहराता था। अगाध पानी पर्वत और अनन्त आकाश! विविधरंगी पक्षियों के मृदु मंजुल कलरव ने बहुरंगी वनखंड को प्राणवान बना दिया था। समुद्र के कल्लोल पर्वत के तल से टकराकर सजीव सा ताल देते थे। पवन से खेलते पत्ते मानों हँस रहे थे। सर्वांग सुन्दरी वनदेवी जैसी उस रमणी के पीछे जाने क्या क्या सोचता राजा भी सावधानीपूर्वक लुकता छुपता चला जा रहा था।

आगे जाने पर एक बड़े वृक्ष के नीचे उत्तंग शिला पर सिंह जैसे निर्भय मुनिराज को ध्यानमग्न बैठे देख युवती के आनन्द का पार नहीं रहा। उसका रोम रोम पुलकित हो उठा।

उस मुनि के पास कुछ न होते हुए भी कैसी अलौकिक शांति थी। यही कारण है कि उनकी मुखमुद्रा चन्द्रमा की तरह सौम्य, शीतल और आह्लादिक थी। तप के तेज से उनका शरीर तप्त सुवर्म की तरह चमक रहा था। मानों एकांतं, शांत और सुरम्य वनघटा की गोद में साक्षात् स्वयं धर्म ही शरी धारण कर शिला पर आ बैठा हो ऐसे वे मुनिश्रेष्ठ लगते थे।

इस दुर्गम एवं जल मध्य स्थित वनखंड में ऐसे महात्मा के अकल्पित दर्शन से वह स्वयं को धन्य मानती हुई अनायास ही उनके करीब चली गई और भाव पूर्वक वन्दन कर, हाथ जोड़ आंखे बन्द कर मुनिराज की एवं संयमधर्म की भक्ति पूर्वक स्तुति करने लगी। छुपे रहे राजा को कौतुक हुआ।

ध्यानपूर्ण कर चण्डवेग नामके ज्ञानी गुरु महाराज ने तन-मन के ताप क्लेश का नाश करने वाला धर्मलाभ रूप आशीर्वाद दिया और बोले कौन ? चंपकलता! धर्मलाभ!

बिलकुल अनजाने मुनिजी के मुख से अपना नाम सुन चम्पकलता को आश्चर्य हुआ। वह हाँ भगवंत! मैं चम्पकलता! कहकर हाथ जोड़ सामने ही शुद्ध भूमि पर बैठ गई। राजा महासेन भी इन लोगों को अच्छी तरह देखसुन सके ऐसी जगह में कंकेली वृक्षों के पीछे छुप कर बैठ गया। अपने कौतुक को रसिकता का पुट मिलेगा। देखें अब क्या होता है? कुछ नवीन होने की आशा में वह बगुले की तरह स्थिर हो गया।।

सामान्य जीवों की दृष्टि बहुत सामान्य होने की वजह से उन्हें सामान्य चीजें भी बड़ी महत्त्वपूर्ण महसूस होती है। सही तो यह है कि चीज अच्छी होने की वजह से नहीं किन्तु हमें पसंद पड़ने से अच्छी लगती है। ये बेचारे क्षुद्रता और तुच्छता में जीते हुए जीव अपने को अच्छी लगती वस्तु के लिए इतने भावुक हो जाते हैं कि दूसरो के साथ मामूली बातों का व्यवहार भी उन्हें बरदास्त नहीं होता। यही कारण है कि उनकी आंख दृश्यों में और उनका मन उस व्यवहार में अपनी तरफ से मिलावय करता है अतः जो वास्तव में हकीकत में होता है उससे कुछ दूसरा ही नजर आता है समझ आता है। यह सब हमारे गंदे मन की गंदी चालाकी है। इस स्थिति में तो बाहरी मामला भी हम सही देख समझ नहीं पाते आंतरिक स्थिति की बात तो काफी दूर रही। ज्ञानियों की तो दृष्टि ही नहीं, दुनिया ही निराली है। उसे तुच्छ स्वार्थों में लालसाओं में पड़ा हुआ गिरा हुआ मनुष्य कैसे समझ सकता है? नहीं, मनुष्य को चाहिए कि वह यथार्थता पर पहुँचने की कोशिश करे वर्ना मनुष्य अच्चे से अच्छा संयोग तो खो देगा साथ ही बुरी आदतों व बुराईयों से भर जायगा। आगे जाकर उसे यह पता लगना भी मुश्किल हो जायेगा कि अच्छाई क्या है? बुराई क्या है। क्या फायदा है अच्छाई से? क्या नुक्सान है बुराई से?

सामान्य आदमी की पहुँच भी कितनी! उसके सोचने में गहराई भी कितनी? उसके सोचने में गहराई भी कितनी? राजा महासेन यही सोचता था कि यह किस्सा कोई रसिक मोड़ लेगा। सर्वथा निर्जन वन में एक युवान और एक युवती की दूसरी बात भी क्या हो सकती है?

सही बात तो यह है कि जिसके पास अपने स्वयं (आत्मा) के बारे में कोई कार्यक्रम न हो वही दूसरों का तमाशा देखने को रुक सकता है। जिसका पास हीरा माणक न हो वह रंगीन कंकड़ों को इकट्ठा करने में अपना समय बरबाद कर सकता है।

हृदय की गहराई में से निकलते हो, ऐसे शब्दों में मुनिराज कहने लगे–

चम्पकलता, मनुष्य का जीवन बहुत ही महंगा एवं अत्यंत दुर्लभ है जो हमें हमारी महान् पुण्याई से हाथ आया है। यह किसी ने मेहरबानी करके नहीं

दिया। हमने इसे चाहा था, मांगा था मिन्नतें की थीं। प्रार्थनाएं की थी। हमारी ये बड़ी पुरानी तमन्ना थी ये भावना देवों के भव में भी की थी कि एक बार हम मनुष्य बन जाये तो क्या का क्या हो जाये! हम हमारा काम कर लें। सारे संसार की सम्पत्ति देने पर भी मनुष्य का जीवन नहीं मिल सकता फिर मनुष्य के जीवन में भी वीतराग का धर्म मिलना और मुश्किल बात है मनुष्य का जीवन और वीतराग का धर्म ये दो चीज अगर मिल जाय तो मनुष्य के तमाम दुःखों का अंत आना अनिवार्य हो जाये। किन्तु यह जीव मनुष्य बनते ही ममता माया में ऐसा लिपट जाता है कि अपना हित ही उसे समझ में नहीं आता। जिन वस्तुओं के लिए सारी उम्र उपद्रव किये वे सारी पड़ी रह जाती है और मनुष्य धीरे से बिदा हो जाता है। कितनी कठिनाई से मिली हुई वस्तु कितनी सरलता से छूट जाती है। बहुत कुछ हो सकता था किन्तु कुछ भी किये बिना जीव चला जाता है। सच तो यह है कि धर्म बिना कुछ बनता ही नहीं है। सारी जग हम जीत लें परन्तु जो जीवन हार जायें तो तीनों लोक में बड़े हतभागी हम ही रहे। ये जो कुछ भी आज हमारे पास है कल नहीं होगा। सही तो यह है कि यह सब कुछ होगा केवल हम ही नहीं होंगे। आज जब हमें इतनी अच्छी अनुकूलता मिली है उसमें भी हम धर्म चुके तो प्रतिकूलता में भी सभी सभी सुविधा में भी धर्म नहीं किया वह असुविधा में क्या धर्म करेगा? धर्म सामग्री की विपुलता में भी धर्म करणी चुका उसका अर्थ ही इतना है कि तुमने न करने के सभी काम किये, करने का कार्य जो एक ही था वह भी नहीं किया। अब तुम्हारा क्या होगा?

राजा महासेन की रसवृत्ति से बिलकुल विपरीत बात निकली। वह कुछ और बात की कल्पना में था।

मुनि भगवंत आगे फरमाने लगे, जीव को न सोने चांदी की जरूरत है, न हीरे जेवरात की। उसे खास जरूरत है समझदारी की। नासमझ मनुष्य विषय-लोभ ममता में पड़कर यहां भी बड़ी बड़ी पीड़ा और क्लेश पाता ही है - परभव के लिए भी महान् अनर्थों को पैदा करता है। जो चीजें पशुभव में भी मिलना सुलभ है उन चीजों को पाने के लिए मनुष्य का जीवन बरबाद नहीं करना चाहिए। जो वस्तु देवों को मिलना कठिन है उसे पाने के लिये

मनुष्य को अटल निर्धार और घोर प्रयत्न करने चाहिए। ये जो दुनिया की चीजें हम पाते भी हों तो वह आत्मा की कीमत पर मिलती हैं- उससे आत्मा खंडित होती है। जिन चीजों को पाने बचाने में हम हमारी सारी जिन्दगी लगा देते हैं, वे चीजें वहीं रह जाती हैं और हम खप जाते हैं - खत्म हो जाते है। सभी चीजें अपने मुकाम पर होती हैं - केवल सिर्फ हम ही अपने ठिकाने से धीरे धीरे से खिसक जाते हैं। न लाखों वर्ष की आयुष्य से जी भरता है, न सारी दुनिया की चीजें खाने-पीने से जी धापता है - न सारी पांचों इन्द्रियों को खुश करने वाले सभी विषयों से अत्यंत वृद्ध होने पर भी मन भरता है - न तसल्ली होती है। जी भरने, मन भरने व आत्मा को तृप्त करने का केवल एक ही रास्ता है - उत्तम प्रकार की समझदारी, सम्यक् प्रकार का सद्बोध। हे चम्पकलता! मन और इन्द्रियों की खुशी के लिए इस जीव ने अनेक भवों को बिगाड़ दिये, आत्मा को गला दिया, यदि एक भव भी आत्मा के लिये शरीर काम आ जाय तो सारी कसर निकल जाये। अतः मनुष्य भवं को सफल करने के लिए अपनी आत्मा में वीतराग भाव को सुप्रतिष्ठित करो, जिससे आत्मा तृप्त और सदा सुप्रसन्न रहेगी। इत्यादि..... धर्मोपदेश सुनकर चम्पकलता को आत्मीय आनन्द हुआ। वह बोली—

भगवन्! आप को परम दयालु और भव्य-भाग्यवान हैं। सारी दुनिया अपने ही मतलब में पड़ी और अपनी ही बातों में लगी हैं। एक आप हैं जो हमारे हित का ख्याल रखते हैं और बलवती प्रेरणा देते हैं। सन्मार्ग पर अग्रसर होकर मुकाम तक पहुँचने की सही योजना बताते हैं; और एक हम हैं अभागे ऐसे कि हमारे हित के लिए भी वीतराग दर्शित मार्ग पर चल नहीं सकते हैं। न उत्कृष्ट धर्म बन पाता है, न पाप ही हमारा पीछा छोड़ता हैं। मुनि बोले भद्रे! जीव समझदारी भरे प्रयत्न करें तो सब कुछ संभव है। और धर्म तो बहुत सरलता से बन पाने वाली चीज है। अपने स्वार्थ शरीर-परिवार के लिए जीव कितना कितना करता है? आपकी स्वयं की आत्मा के लिये कुछ करना चाहिए। सबका काम करने वाला अपना ही कार्य चूक जायेगा तो कितना बुरा होगा?

क्रमशः

तित्थयर वर्ष २९
अप्रैल २००५ से मार्च २००६

निबन्ध

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	नैतिक उपयोगितावाद महावीर दर्शन के आलोक में-	डॉ. लता बोथरा	५
२.	तेजसकाय के जीव	डॉ. जीवराज जैन	२१
३.	अग्निकाय की विद्युत से तुलना	डॉ. जीवराज जैन	५८
४.	पुरुलिया के पुरातत्व	श्री सुभाष राय	६३
५.	तेज़सकाय के बारे में उठाये जाने वाले प्रश्नों का खुलासा	डॉ. जीवराज जैन	१०९
६.	करुण हत्या	डॉ. जीवराज जैन	११५
७.	बान्दा का देवालय	श्री सुभाष राय	१२६
८.	संवेगरंग शाला के कर्त्ता जिनचन्द्रसूरि	साध्वी प्रियदिवांजना श्री जी	१६१
९.	समाधि मरण	डॉ. जीवराज जैन	१६७
१०.	पाड़ा का देवालय	श्री सुभाष राय	१७९
११.	उमास्वाति एवं उनकी उच्चैनागर शाखा का जन्म स्थल	डॉ. सागरमल जैन	२१३
१२.	अहिंसा और वैराग्य का प्रतीक गिरनार	श्री सुरेन्द्र चन्द जैन	२३४
१३.	साबूदाना क्या खा रहे है आप	श्री सुरेन्द्रचन्द जैन	२३६
१४.	क्षमा की शीतल धारा	मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज	२६५, ३१६

१५. उमास्वाति और उनकी परम्परा	डॉ. सागरमल जैन	२७५
१६. प्राकृत एवं अपभ्रंश जैन साहित्य में कृष्ण	डॉ. सागरमल जैन	३२९
१७. भक्ति की अवधारणा	डॉ. लता बोथरा	३६९
१८. हिन्दुओं के आराध्य भ. महावीर	स्व. श्री परिपूर्णानन्द वर्मा	३७२
१९. नमस्कार माहात्मय	पं. काशीनाथ जैन	३७७, ४२९
२०. जिनप्रतिमा का प्राचीन स्वरूप	प्रो. सागरमल जैन	४२१
२१. निर्ग्रन्थ-संघ और श्रमण परम्परा	साध्वी विजय श्री आर्या	४७३
२२. काकन्दी नगरी		४७८
२३. जैसलमेर की अनमोल निधि	कुन्दन लाल जैन	४८५
२४. व्याप्त व्यक्तित्वः अखण्ड कृतित्व	डॉ. लता बोथरा	अप्रैल अंक

कथानक :

१. श्रीचन्द्र राज चरित्र	२८, ७२, १३१, १६१, १८३, २२५, २८४
२. वैर का विपाक	३८८, ४३८, ४८९
संकलन	२३९, २९२, ३४५, ३९८, ४४७
पुस्तक समीक्षा	**२४१**

कविता :

५. यशोदा का त्याग	२८२

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD:
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nastà	Jocker
Bàdsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

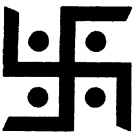

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 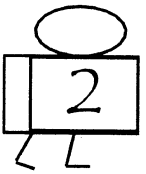 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.

Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020

Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,

Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 12 TITTHAYARA March 2006
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225